Drishti IAS

करेंट अफेयर्स छत्तीसगढ़

जनवरी (संग्रह)

2024

Drishti, 641, First Floor, Dr. Mukharjee Nagar, Delhi-110009
Inquiry (English): 8010440440, Inquiry (Hindi): 8750187501
Email: help@groupdrishti.in

अनुक्रम

छत्तीसगढ़ **3**

- राम मंदिर के लिये सुगंधित चावल 3
- अर्जेंटीना के साथ लिथियम-डील 3
- छत्तीसगढ़ बचाओ आंदोलन 5
- छत्तीसगढ़ ने श्री रामलला दर्शन योजना शुरू की 6
- अयोध्या राम मंदिर के लिये वार्षिक नि:शुल्क ट्रेन योजना 6
- मंदिर प्रतिष्ठापन से पहले छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री ने अयोध्या के लिये 'राम रथ' को हरी झंडी दिखाई 7
- छत्तीसगढ़ गणतंत्र दिवस की झाँकी 8
- छत्तीसगढ़ में माओवादियों से मुठभेड़ 9

दृष्टि The Vision

नोट :

छत्तीसगढ़

राम मंदिर के लिये सुगंधित चावल

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में छत्तीसगढ़ ने 22 जनवरी को होने वाले राम मंदिर के अभिषेक समारोह के लिये अयोध्या में सुगंधित चावल भेजे गए।

मुख्य बिंदु

- इस अवसर पर अयोध्या राम मंदिर में "रामजी भोग और भंडारा" के लिये चावल ले जाने वाले 11 ट्रकों को मुख्यमंत्री विष्णु देव साई ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।
- अयोध्या राम मंदिर के लिये चावल भेजने हेतु 'द राइस मिलर्स एसोसिएशन ऑफ छत्तीसगढ़' द्वारा श्री राम मंदिर में एक अर्पण समारोह का आयोजन किया गया था।
- छत्तीसगढ़ में उत्पादित सर्वोत्तम किस्म के सुगंधित चावल आर. बी. गोल्ड को अयोध्या में राम मंदिर के उद्घाटन समारोह के लिये चुना गया है।
- छत्तीसगढ़ का भगवान राम से पौराणिक संबंध है। रायपुर के बाहरी इलाके चंदखुरी को भगवान राम की माँ कौशल्या देवी का जन्मस्थान माना जाता है। चंदखुरी में विश्व का एकमात्र एक ऐसा मंदिर है, जो कौशल्या देवी को समर्पित है।
- ऐसा माना जाता है कि भगवान राम ने अपने 14 वर्ष के वनवास काल के दौरान कुछ दिन छत्तीसगढ़ में बिताए थे, जिसे राज्य सरकार ने "राम गमन पथ" के रूप में विकसित किया है।
- 'राम गमन पथ' परियोजना के तहत छत्तीसगढ़ सरकार राज्य में 248 स्थानों की पहचान कर उनका विकास करेगी, जहाँ भगवान राम, अपनी पत्नी देवी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ अपने वनवास काल के दौरान रहे थे।

अर्जेंटीना के साथ लिथियम-डील

चर्चा में क्यों ?

भारत सरकार के खनन मंत्रालय ने राज्य के स्वामित्व वाली खनिज विदेश इंडिया लिमिटेड (KABIL) के माध्यम से पाँच-विषम लिथियम ब्लॉकों के संभावित अधिग्रहण और विकास के लिये अर्जेंटीना के खनिक कैमयेन के साथ एक मसौदा अन्वेषण तथा विकास समझौता किया है।

- कंपनी ने खनिज के "संभावित अन्वेषण, निष्कर्षण, प्रसंस्करण और व्यावसायीकरण" के लिये चिली की खनिक ENAMI के साथ एक गैर-प्रकटीकरण समझौता भी किया है।

मुख्य बिंदु:

- लिथियम एक क्षार खनिज है, जिसे 'सफेद सोना' भी कहा जाता है। यह नरम, चाँदी जैसी सफेद धातु है, जो आवर्त सारणी की सबसे हल्की धातु है।
- लिथियम के प्रमुख गुणों में उच्च प्रतिक्रियाशीलता, कम घनत्व और उत्कृष्ट विद्युत रासायनिक गुण शामिल हैं।
- लिथियम प्राकृतिक रूप से स्पोड्यूमिन, पेटालाइट और लेपिडोलाइट सहित विभिन्न खनिजों में पाया जाता है एवं इन खनिजों से निकाला जाता है तथा लिथियम धातु या इसके यौगिकों में परिष्कृत किया जाता है।
  - लिथियम के शीर्ष उत्पादक ऑस्ट्रेलिया, चिली, चीन और अर्जेंटीना हैं।
- यह स्मार्टफोन, लैपटॉप, इलेक्ट्रिक वाहन और अन्य इलेक्ट्रॉनिक्स में उपयोग की जाने वाली रिचार्जेबल बैटरी का एक महत्त्वपूर्ण घटक है।
  - लिथियम यौगिकों का उपयोग काँच और चीनी मिट्टी की चीज़ें को मज़बूत करने के लिये किया जाता है, जिससे वे अधिक टिकाऊ और गर्मी प्रतिरोधी बन जाते हैं।

नोट :

- इसका उपयोग द्विध्रुवी विकार के उपचार में मूड स्टेबलाइज़र के रूप में किया जाता है।
- लिथियम ग्रीस का उपयोग उच्च दबाव और उच्च तापमान अनुप्रयोगों में किया जाता है।

- वर्ष 2023 में लिथियम खोजों में वृद्धि देखी गई:
  - जम्मू और कश्मीर में बड़े पैमाने पर भंडार का पता चला (अनुमानित 5.9 मिलियन टन)।
  - राजस्थान में पाए गए भंडार (संभवत: भारत की 80% मांग को पूरा करते हैं)।
  - झारखंड में अतिरिक्त भंडार की पहचान की गई।
- हालाँकि भारत ने लिथियम ब्लॉकों को नीलामी के लिये रखा है: एक जम्मू-कश्मीर में और दूसरा छत्तीसगढ़ में, EV, लिथियम-आयन बैटरी बनाने एवं अन्य ऊर्जा भंडारण समाधान जैसी श्रेणियों में इसकी अधिकांश घरेलू आवश्यकताएँ पूरी तरह से आयात के माध्यम से पूरी की जाती हैं।

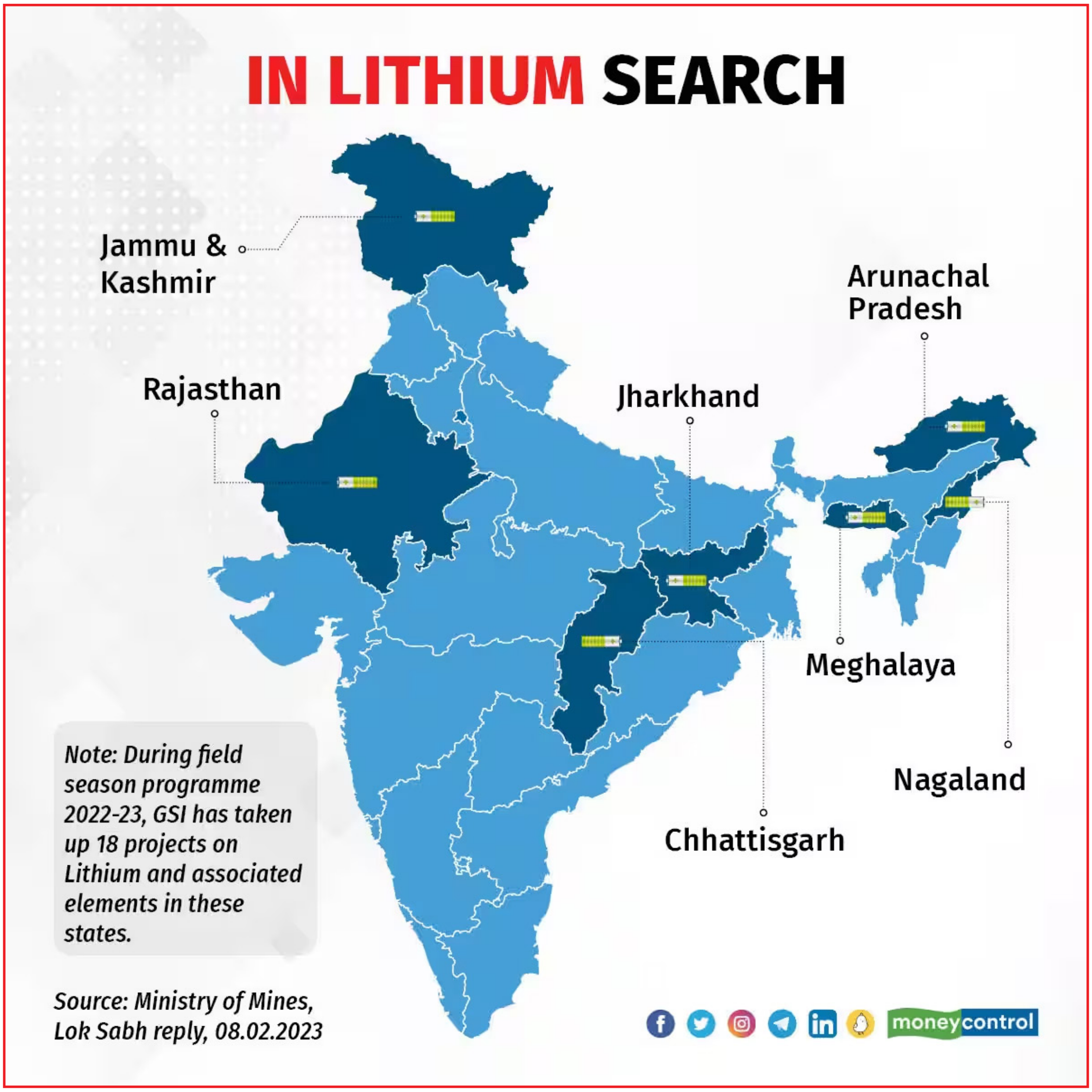

छत्तीसगढ़ बचाओ आंदोलन

चर्चा में क्यों ?

छत्तीसगढ़ में संयुक्त किसान मोर्चा (SKM) ने कोयला खनन के लिये बड़े पैमाने पर पेड़ों की कटाई के खिलाफ हसदेव अरण्य में प्रस्तावित नागरिकों के 'प्रोटेस्ट मार्च' को अपना समर्थन व्यक्त किया है।

- हसदेव अरंड के जंगलों को जैवविविधता से समृद्ध माना जाता है, हसदेव नदी का जलग्रहण क्षेत्र अविकसित क्षेत्रों में पीने के पानी के लिये महत्त्वपूर्ण सहायता प्रदान करता है।

मुख्य बिंदु:

- छत्तीसगढ़ में परसा पूर्व और काँटा बासन (PEKB) कोयला ब्लॉकों के लिये हसदेव में 137 हेक्टेयर जैवविविधता वाले जंगल की कटाई से हानिकारक प्रभाव पड़ेगा। जिसमें हसदेव नदी का प्रभावित होना, मानव-हाथी संघर्ष में वृद्धि एवं स्थानीय जैवविविधता के लिये नकारात्मक परिणाम शामिल हैं।
- सघन वन क्षेत्र के नीचे कुल 5 अरब टन कोयला होने का अनुमान है।
  - नवीनतम वनोन्मूलन PEKB के लिये मंज़ूरी के दूसरे चरण का प्रतीक है; पहले चरण में राजस्थान और पड़ोसी राज्य में विद्युत की आपूर्ति हेतु कोयला निष्कर्षण के लिये खनन गतिविधियों को मंज़ूरी देना शामिल था।
- जारी वनोन्मूलन से उत्तरी छत्तीसगढ़ के सरगुजा ज़िले के सहली, तारा, जनार्दनपुर, घाटबर्रा, फतेहपुर और हरिहरपुर जैसे पड़ोसी गाँवों के 700 मूल परिवारों की आजीविका विस्थापित तथा प्रभावित होगी।
- हसदेव अरण्य बचाओ संघर्ष समिति, हसदेव वन बचाओ समिति के आदिवासी अधिकार कार्यकर्त्ताओं के साथ-साथ ग्रामसभा के नेता भी लगातार पेड़ों की कटाई का सक्रिय रूप से विरोध कर रहे हैं।
- हसदेव अरण्य कोयला क्षेत्र (HACF) में खनन गतिविधियाँ:
  - HACF लगभग 1,880 वर्ग किमी. में फैला हुआ है, जिसमे 23 कोयला ब्लॉक शामिल हैं।
  - वर्ष 2009 में केंद्र सरकार द्वारा इस क्षेत्र को खनन के लिये 'नो-गो ज़ोन' घोषित किया गया था।
  - खनन की मांग में वर्ष 2010 के दौरान वृद्धि हुई, जब छत्तीसगढ़ सरकार ने PEKB कोयला क्षेत्रों के लिये वन भूमि को स्थानांतरित करने हेतु वन मंज़ूरी की सिफारिश की।
  - वर्ष 2012 में, PEKB कोयला खदानों के चरण-I में खनन हेतु पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEF) द्वारा वन मंज़ूरी प्रदान की गई थी।
  - हालाँकि इससे संबंधित मामले विभिन्न न्यायालयों में लंबित हैं, मार्च 2022 में छत्तीसगढ़ सरकार ने PEKB कोयला ब्लॉक में खनन के दूसरे चरण को मंज़ूरी दे दी।

हसदेव अरण्य वन

- छत्तीसगढ़ के उत्तरी भाग में फैला हुआ हसदेव अरण्य वन क्षेत्र अपनी जैवविविधता और कोयला भंडार के लिये जाना जाता है।
- यह वन क्षेत्र महत्त्वपूर्ण आदिवासी आबादी वाले ज़िलों कोरबा, सुजापुर और सरगुजा के अंतर्गत आता है।
- महानदी की सहायक नदी हसदेव यहाँ से प्रवाहित होती है।
- हसदेव अरण्य मध्य भारत का सबसे बड़ा अखंडित जंगल है जिसमें प्राचीन साल (शोरिया रोबस्टा) और सागौन के जंगल शामिल हैं।
- यह एक प्रसिद्ध प्रवासी गलियारा है, जिसमें हाथियों की महत्त्वपूर्ण उपस्थिति है।

छत्तीसगढ़ ने श्री रामलला दर्शन योजना शुरू की

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में, छत्तीसगढ़ सरकार ने अयोध्या में नवनिर्मित राम मंदिर की तीर्थ यात्रा 'श्री रामलला दर्शन योजना' शुरू करने का निर्णय लिया है।

- प्रतिवर्ष लगभग 20,000 तीर्थयात्रियों को श्री रामलला दर्शन के लिये ले जाया जाएगा।

मुख्य बिंदु:

- छत्तीसगढ़ पर्यटन बोर्ड और बजट पर्यटन विभाग इस योजना के कार्यान्वयन में सहायता करेगा।
- तीर्थयात्रा के लिये पात्रता 18 से 75 वर्ष के छत्तीसगढ़ मूल निवासियों के लिये होगी, जो ज़िला मेडिकल बोर्ड द्वारा आयोजित स्वास्थ्य परीक्षण में फिट पाए जाते हैं।
  - तीर्थयात्रा की दूरी लगभग 900 किलोमीटर है और परिवहन की सुविधा भारतीय रेलवे खानपान एवं पर्यटन निगम (IRCTC) के सहयोग से की जाएगी।
  - लाभार्थियों को संबंधित ज़िला प्रशासन द्वारा रेलवे स्टेशन से उनके आवास तक लाया और वापस ले जाया जाएगा।
- इस योजना के क्रियान्वयन के लिये प्रत्येक ज़िले में कलेक्टर की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया जाएगा।
- कैबिनेट ने प्रमुख वकील प्रफुल्ल भरत को राज्य का नया महाधिवक्ता नियुक्त करने का भी निर्णय लिया।

अयोध्या राम मंदिर के लिये वार्षिक नि:शुल्क ट्रेन योजना

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में, छत्तीसगढ़ सरकार ने उत्तर प्रदेश के अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि मंदिर के दर्शन करने के इच्छुक भक्तों के लिये एक वार्षिक मुफ्त ट्रेन यात्रा योजना को स्वीकृति दी।

- इसे छत्तीसगढ़ पर्यटन बोर्ड द्वारा कार्यान्वित किया जाएगा और राज्य पर्यटन विभाग इसके लिये आवश्यक बजट आवंटित करेगा।

मुख्य बिंदु:

- अभी हर कोई इस योजना का लाभ नहीं उठा सकता क्योंकि तीर्थयात्रियों के चयन के लिये कलेक्टरों के अधीन एक समिति गठित की जाएगी।
  - राज्य सरकार की एक विज्ञप्ति के अनुसार, इस योजना का लाभ उठाने के लिये पात्र व्यक्तियों की आयु 18 से 75 वर्ष के बीच होनी चाहिये और 55 वर्ष से अधिक आयु वालों को प्रारंभिक चरण में प्राथमिकता दी जाएगी।
- लगभग 20,000 लोगों को ट्रेन से वार्षिक तीर्थयात्रा पर अयोध्या ले जाया जाएगा।
  - बोर्डिंग के लिये स्टेशन रायपुर, दुर्ग, रायगढ़ और अंबिकापुर हैं तथा 900 किलोमीटर की यात्रा का समापन अयोध्या में होगा।
  - भक्तों के लिये काशी विश्वनाथ मंदिर के दर्शन और गंगा आरती में शामिल होने के लिये वाराणसी में एक रुकने के लिये एक स्थान भी है।
- योजना को लागू करने के लिये भारतीय रेलवे खानपान और पर्यटन निगम (IRCTC) के साथ एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर भी हस्ताक्षर किये जाएँगे।
- अयोध्या आने के इच्छुक तीर्थयात्रियों के लिये एक साप्ताहिक विशेष ट्रेन की भी व्यवस्था की जाएगी।

नोट:

- राज्य सरकार ने अयोध्या में राम मंदिर की प्रतिष्ठा को देखते हुए 22 जनवरी को पूरे राज्य में शुष्क दिवस घोषित किया गया है ।
- छत्तीसगढ़ भगवान राम का ननिहाल है।
  - छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से 27 किमी दूर स्थित चंदखुरी गाँव को भगवान राम की माता कौशल्या का जन्मस्थान माना जाता है।
  - गाँव में स्थित प्राचीन माता कौशल्या मंदिर को प्रदेश की पिछली सरकार द्वारा भव्य रूप दिया गया था।

मंदिर प्रतिष्ठापन से पहले छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री ने अयोध्या के लिये 'राम रथ' को हरी झंडी दिखाई

चर्चा में क्यों ?

राम मंदिर उद्घाटन से पहले, छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साई और उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने अयोध्या के लिये 'राम रथ' को हरी झंडी दिखाई।

मुख्य बिंदु:

- उन्होंने हस्तलिखित 'जय श्री राम' संदेश भी भेजे, जो अयोध्या जाने वाले रथ में रखे गए।
- रायपुर कॉन्वेंट स्कूल के विद्यार्थियों ने भी अपने संदेश ड्रॉप बॉक्स में डालकर योगदान दिया।
- रथ पूरे राज्य में घुमा और निवासियों से संदेश तथा शुभकामनाएँ एकत्र की।

राम मंदिर का परिचय

- अयोध्या राम मंदिर का लेआउट:
    - मंदिर 20-20 फुट ऊँची तीन मंज़िलों पर बना है, जिनमें कुल 392 खंभे और 44 दरवाज़े हैं।
    - निर्माण में मकराना संगमरमर एवं गुलाबी बलुआ पत्थर, ग्रेनाइट पत्थर और रंगीन संगमरमर का उपयोग किया गया है।
    - मंदिर की नींव रोलर-कॉम्पैक्ट कंक्रीट की 14 मीटर मोटी परत से बनी है और ज़मीन की नमी से बचाने के लिये 21 फुट ऊँचा ग्रेनाइट प्लिंथ लगाया गया है।
    - निर्माण में कहीं भी लोहे का प्रयोग नहीं किया गया है।
- मंदिर की स्थापत्य शैली गर्भगृह, मंडप (हॉल) और मंदिरों के साथ नागर शैली है।
- परिसर के प्रत्येक कोना सूर्य, भगवती, गणेश, शिव को समर्पित होगा। उत्तरी और दक्षिणी भुजाओं पर क्रमशः अन्नपूर्णा तथा हनुमान जी के मंदिर बनाए जाएँगे।
- महर्षि वाल्मिकी, वशिष्ठ, विश्वामित्र, अगस्त्य, निषाद राज, शबरी आदि के मंदिर भी प्रस्तावित हैं।

छत्तीसगढ़ गणतंत्र दिवस की झाँकी

चर्चा में क्यों ?

26 जनवरी को गणतंत्र दिवस परेड से पहले 22 जनवरी को नई दिल्ली के नेशनल थिएटर में छत्तीसगढ़ की 'बस्तर की आदिम जन संसद: मुरिया दरबार' की झाँकी प्रदर्शित की गई।

मुख्य बिंदु:

- आदिम काल से आदिवासी समाज की लोकतांत्रिक चेतना को प्रदर्शित करने के लिये झाँकी की सराहना की गई।
- छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री ने झाँकी बनाने वाली टीम की सराहना करते हुए कहा कि यह विषय आदिवासी समाज के लिये महत्त्वपूर्ण है और यह विश्व को उनकी लोकतांत्रिक परंपराओं से परिचित कराएगा।
- 'बस्तर की आदिम जन संसद: मुरिया दरबार' की झाँकी जो नई दिल्ली के कर्त्तव्य पथ पर गणतंत्र दिवस परेड का हिस्सा होगी, उसमें मुरिया-दरबार और लिमाऊ-राजा शामिल हैं, जो जगदलपुर की बस्तर-दशहरा परंपरा का हिस्सा हैं।
    - इसमें टेराकोटा शिल्प, लोगों की शक्ति का प्रतीक और बस्तर में सांस्कृतिक विकास को प्रदर्शित करता है।
    - यह छत्तीसगढ़ के एक ज़िले बस्तर में सामुदायिक निर्णय लेने की 600 वर्ष पुरानी आदिवासी परंपरा को भी प्रदर्शित करता है।

मुरिया-दरबार

- बस्तर में मुरिया दरबार की शुरुआत 8 मार्च 1876 को हुई थी, जिसमें सिरोंचा के डिप्टी कमिश्नर मेक जॉर्ज ने मांझी-चालकियों को संबोधित किया था।
- बाद में लोगों की सुविधा के अनुसार इसे बस्तर दशहरा का अभिन्न अंग बना दिया गया, जो परंपरा के अनुसार 145 वर्षों तक जारी रहा।

लिमऊ राजा

- यह प्राकृतिक पत्थर का सिंहासन है जो बस्तर की लोकतांत्रिक जड़ों का प्रतीक है और बड़े डोंगर, गादीराव डोंगरी के भीतर स्थित है।
- प्राचीन समय में, जब इस क्षेत्र में शासक का अभाव था, तो समुदाय महत्त्वपूर्ण मामलों पर विचार-विमर्श करने के लिये इस पत्थर के "सिंहासन" के आसपास इकट्ठा होते थे।
- एक अनुष्ठान शुरू हुआ जहाँ प्रतीकात्मक सिंहासन के ऊपर रखा गया एक नींबू निर्णय लेने का केंद्र बिंदु बन गया।

छत्तीसगढ़ में माओवादियों से मुठभेड़

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में छत्तीसगढ़ में सुकमा-बीजापुर सीमा पर माओवादियों के साथ मुठभेड़ में 3 सुरक्षाकर्मी मारे गए और 14 अन्य घायल हो गए।

मुख्य बिंदु:

- आधिकारिक बयान के मुताबिक, यह घटना सुरक्षाकर्मियों की संयुक्त टीम के तलाशी अभियान के दौरान टेकलगुडेम गाँव के पास हुई।
- माओवादियों के गढ़ टेकलगुडेम में सुरक्षाकर्मियों का एक नया शिविर स्थापित किया गया।
- शिविर स्थापित करने के बाद, स्पेशल टास्क फोर्स डिस्ट्रिक्ट रिज़र्व गार्ड और कमांडो बटालियन फॉर रेसोल्यूट एक्शन [CoBRA- केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (CRPF) की एक जंगल वारफेयर यूनिट] के जवान पास के जोनागुडा-अलीगुडा गाँवों की तलाशी ले रहे थे, तभी माओवादियों ने गोलीबारी शुरू कर दी।
- सुकमा ज़िला:
  - यह ज़िला छत्तीसगढ़ राज्य के दक्षिणी सिरे पर स्थित है जिसे वर्ष 2012 में दंतेवाड़ा से अलग करके बनाया गया था।
  - यह ज़िला अर्द्ध-उष्णकटिबंधीय वन से आच्छादित है और जनजातीय समुदाय गोंड (Gond) की मुख्य भूमि है।
  - इस ज़िले से होकर बहने वाली एक प्रमुख नदी सबरी (गोदावरी नदी की सहायक नदी) है।
  - कुछ दशकों से यह क्षेत्र वामपंथी उग्रवाद (Left Wing Extremism- LWE) गतिविधियों का मुख्य क्षेत्र बन गया है।
  - इस क्षेत्र को ऊबड़-खाबड़ और मुश्किल भौगोलिक स्थानों ने LWE कार्यकर्त्ताओं के लिये एक सुरक्षित ठिकाना बना दिया।

भारत में वामपंथी उग्रवाद

- वामपंथी उग्रवादियों को विश्व के अन्य देशों में माओवादियों के रूप में और भारत में नक्सलियों के रूप में जाना जाता है।
- नक्सलवाद शब्द का नाम पश्चिम बंगाल के गाँव नक्सलबाड़ी से लिया गया है। इसकी शुरुआत स्थानीय ज़मींदारों के खिलाफ विद्रोह के रूप में हुई, जिन्होंने भूमि विवाद पर एक किसान की पिटाई की थी।
  - विद्रोह की शुरुआत वर्ष 1967 में कानू सान्याल और जगन संथाल के नेतृत्व में मेहनतकश किसानों को भूमि के उचित पुनर्वितरण के उद्देश्य से की गई थी।
- यह आंदोलन छत्तीसगढ़, ओडिशा और आंध्र प्रदेश जैसे कम विकसित पूर्वी भारत के राज्यों में फैल गया है।
- यह माना जाता है कि नक्सली माओवादी राजनीतिक भावनाओं और विचारधारा का समर्थन करते हैं।
  - माओवाद, साम्यवाद का एक रूप है जो माओत्सेतुंग द्वारा विकसित किया गया है। इस सिद्धांत के समर्थक सशस्त्र विद्रोह, जनसमूह और रणनीतिक गठजोड़ के संयोजन से राज्य की सत्ता पर कब्ज़ा करने में विश्वास रखते हैं।

केंद्रीय रिज़र्व पुलिस बल (CRPF)

- यह आंतरिक सुरक्षा के लिये भारत के प्रमुख केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (गृह मंत्रालय के तहत) में से एक है।
- मूल रूप से वर्ष 1939 में क्राउन रिप्रेज़ेंटेटिव पुलिस के रूप में गठित, यह सबसे पुराने केंद्रीय अर्धसैनिक बलों में से एक है। स्वतंत्रता के बाद, 28 दिसंबर, 1949 को CRPF अधिनियम के लागू होने पर यह केंद्रीय रिज़र्व पुलिस बल बन गया।
- इसका मिशन सरकार को कानून के शासन, सार्वजनिक व्यवस्था एवं आंतरिक सुरक्षा को प्रभावी ढंग से और कुशलता से बनाए रखने, राष्ट्रीय अखंडता को संरक्षित करने व संविधान की सर्वोच्चता को बनाए रखते हुए सामाजिक सद्भाव तथा विकास को बढ़ावा देने में सक्षम बनाना है।

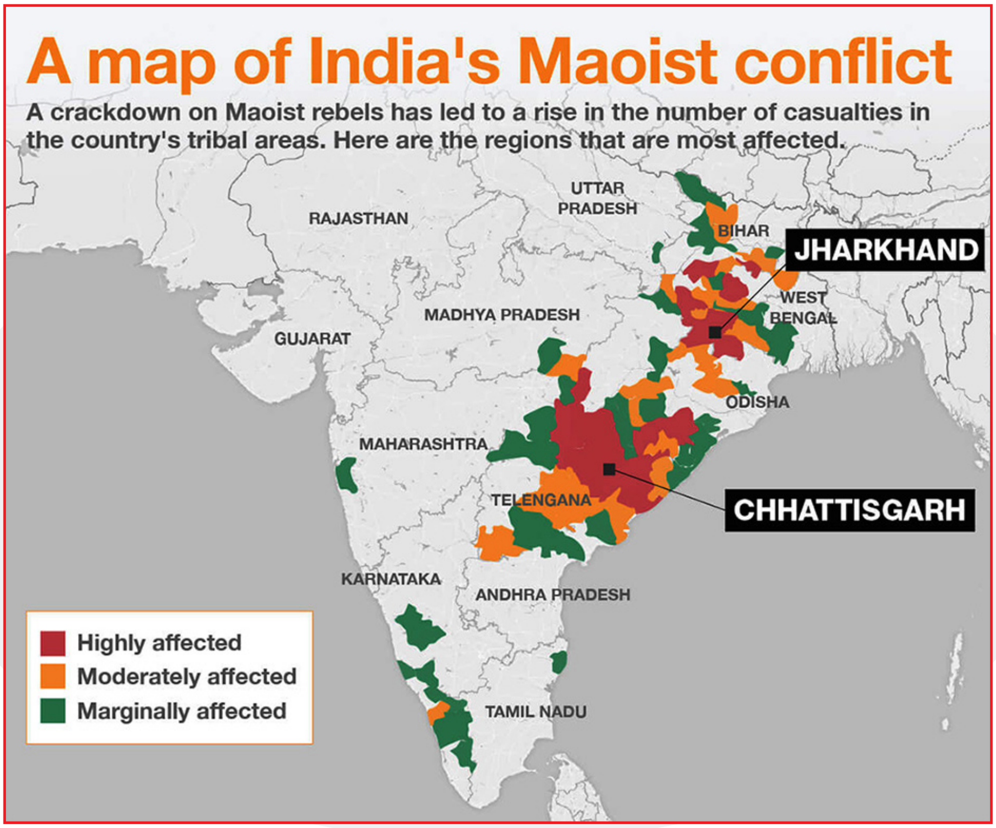

✦ ✦ ✦ ✦